SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के सृजनात्मक चिंतन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन (विशेष संदर्भ विद्यालय का प्रकार एवं लिंग)

निशा सिंह, शोधार्थी, शिक्षा विभाग
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
निशा सिंह, शोधार्थी, शिक्षा विभाग
उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/09/2022
Revised on : -----
Accepted on : 16/09/2022
Plagiarism : 03% on 09/09/2022

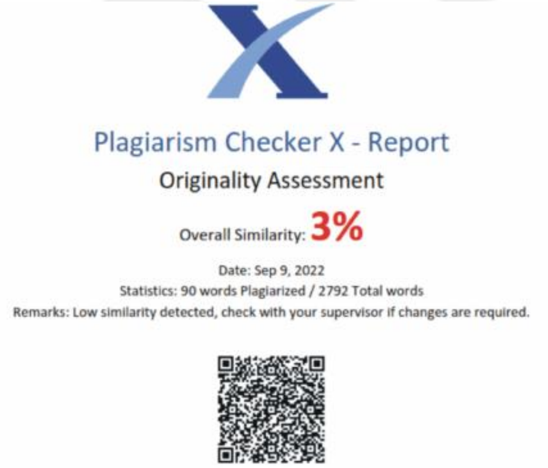

शोध सार

वर्तमान अध्ययन सृजनात्मक चिंतन क्षमता के अध्ययन पर केन्द्रित है। माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन लिंग एवं विद्यालय के प्रकार के आधार पर किया गया है। इसी संदर्भ में कक्षा 10वीं के 200 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श पद्धति से किया गया, जिसमें 100 बालक एवं 100 बालिकाएँ थी। इस शोध का मुख्य उद्देश्य शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच का तुलनात्मक अध्ययन, अशासकीय विद्यालय के बालक/बालिकाओं के सृजनात्मक सोच के अन्तर का अध्ययन शासकीय विद्यालय के बालक बालिकाओं के सृजनात्मक सोच के अन्तर का अध्ययन है। अध्ययन पश्चात् यह निष्कर्ष निकला की अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच में अंतर है, शासकीय विद्यालय के बालक–बालिकाओं की सृजनात्मक सोच में अंतर है, किंतु अशासकीय विद्यालय के बालक–बालिकाओं की सृजनात्मक सोच में मामूली अंतर है।

मुख्य शब्द

सृजनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता, विद्यालय प्रबंधन.

प्रस्तावना

समाज में जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रूप में सृजनात्मक होता है इसीलिए सृजनात्मकता को सार्वभौमिक क्षमता के रूप में माना जाता है जो अलग–अलग व्यक्तियों अलग–अलग स्तर पर भिन्न–भिन्न होती है। सृजनात्मकता न केवल नया या अपरंपरागत उत्पादन करने की क्षमता को संदर्भित करती है बल्कि एक प्रक्रिया होने के नाते यह किसी के सोचने और कुछ भी समझने के अनूठे तरीके को संदर्भित करती है।

सृजनात्मकता कुछ मायनों में मानव बुद्धि की कल्पना है (राजनिकम 2005) एक सृजनात्मक व्यक्ति संज्ञानात्मक क्षमता के साथ–साथ व्यक्तित्व विशेषताओं के संदर्भ में दूसरों से भिन्न होता है। एक सृजनात्मक व्यक्ति अक्सर विचारों की मौलिकता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, खोजी और जिज्ञासु प्रकृति साहसपूर्वक और स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता, विचार धारणा कल्पना करने की क्षमता निडर और तैयार रहने जैसी व्यवहार विशेषताओं को दर्शाता है। अज्ञात और रहस्यमय को स्वीकार करने वाला विभिन्न समस्याओं के प्रति संवेदनशील, परिस्थितियों को अलग रूप में देखने की क्षमता रखने वाला, साहसिक कार्य करने को तैयार रहने वाला होता है। लोगों की सृजनात्मक प्रतिभा को समाज की सबसे बड़ी संपत्ति माना जाता है। एक राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि सभी क्षेत्रों अर्थात् सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक और विज्ञान आदि में अपने नागरिकों की सृजनात्मक क्षमता से तीव्र हो जाती है। सृजनात्मकता एक देश की मानव क्षमता का उच्चतम क्रम है जो इष्टतम विकास, प्रगति और समृद्धि में योगदान देता है और एक राष्ट्र की नियति की महानता और महिमा का पोषण करता है (पांडा 1999)। इस संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच क्षमता का विकास सभी की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए जिसके लिए अनुकुल वातावरण का प्रसार अत्यधिक आवश्यक है। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों की सृजनात्मक का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है (शान 2000) विद्यालय एक ऐसा मंच है जहां सृजनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त अवसर सृजित किये जा सकते हैं।

विद्यालय का माहौल सृजनात्मक बनाकर शिक्षार्थियों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु तैयार किया जा सकता है। वर्तमान में अधिकांश विद्यालय विद्यार्थियों को रटाकर उच्च अंक प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं उन्हें इस बात की जरा भी परवाह नहीं है कि विद्यार्थियों को पढ़ाई गई सामग्री की स्पष्ट समझ है या नहीं। वे अपने विद्यार्थियों को आलोचनात्मक और भिन्न रूप से सोचने के लिए बहुत कम अवसर प्रदान करते हैं। आमतौर पर अधिकांश विद्यालयों में नवीनता, मौलिकता और सृजनात्मकता की कोई संभावना नहीं है। प्रारंभ में अनुशासन और आज्ञाकारिता के नाम पर विद्यालय अभिसारी सोच को ही प्रोत्साहित करता है। स्कूल प्रबंधन के अलग–अलग प्रकार है इसके बावजूद शिक्षकों और संबधित अधिकारियों से अपेक्षा की जाती है कि वे किसी भी लिंग भेद के बावजूद विद्यार्थियों के सृजनात्मक क्षमता के विकास के लिए अनुकुल माहौल प्रदान करें।

पैनी (2005) द्वारा किए गए शोधों की समीक्षा से पता चलता है कि लड़के और लड़कियों की सृजनात्मक सोच क्षमता में काफी अंतर होता है। इस तरह के शोध निष्कर्ष स्पष्ट रूप से लड़के और लड़की के प्रति समाज के व्यवहार के अंतर को बताते हैं, हालांकि छत्तीसगढ़ के सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच क्षमता पर ऐसा कोई शोध प्रमाण नहीं पाया गया है। इस संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ के सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता का उनके लिंग के आधार पर अध्ययन करने का एक प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के बालक–बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता की तुलना करना।
2. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता की तुलना करना।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक–बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता की तुलना करना।
4. अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता की तुलना करना।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के बालकों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता की तुलना करना।
6. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता की तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पना

शोध अध्ययन के उद्देश्यों को देखते हुए अध्ययन, उनके परीक्षण के लिए तैयार की गई विभिन्न परिकल्पनाएँ इस प्रकार है:

1. **H_{01}:** माध्यमिक विद्यालयों के बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।
2. **H_{02}:** शासकीय अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।
3. **H_{03}:** शासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।
4. **H_{04}:** अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।
5. **H_{05}:** शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालकों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।
6. **H_{06}:** शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन

वर्तमान अध्ययन का परिसीमन इस प्रकार किया गयाः

1. माध्यमिक विद्यालय के 200 विद्यार्थियों (100 शासकीय और 100 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों पर किया गया।
2. अध्ययन छत्तीसगढ़ के केवल एक जिले सूरजपुर तक सीमित है।
3. अध्ययन सृजनात्मक चिंतन, विद्यालय प्रबंधन के प्रकार और लिंग के चरों तक ही सीमित है।

शोध विधि

अध्ययन की शोध विधि वर्णनात्मक सर्वेक्षण थी। वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति वर्तमान परिस्थितियों का अध्ययन करने पर ध्यान केंद्रित करती है उसी का व्यापक विवरण प्रस्तुत करती है। वर्तमान अध्ययन शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता का अध्ययन करने और सृजनात्मक चिंतन क्षमता की तुलनात्मक तस्वीर प्राप्त करने पर भी केंद्रित है।

जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में छत्तीसगढ़ के सूरजपुर जिले के सभी माध्यमिक विद्यालय कक्षा 10वीं के विद्यार्थी शामिल हैं।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में छत्तीसगढ़ के सूरजपुर जिले के दो शासकीय एवं दो अशासकीय माध्यमिक विद्यालय शामिल है। 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें शासकीय विद्यालयों से 100 (50 बालक, 50 बालिकाएँ) और अशासकीय विद्यालयों से 100 (50 बालक, 50 बालिकाएँ) शामिल थी। सभी न्यादर्शों का चयन सोद्देश्यपूर्ण तरीके से विद्यालय प्रबंधन के प्रकार एवं लिंग के आधार पर किया गया।

प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्ता ने डॉ. वाकर मेहंदी (1985) द्वारा विकसित और मानकीकृत उपकरण सृजनात्मक चिंतन परीक्षण का उपयोग किया गया जिसमें मुख्यतः आयाम।

विश्लेषण की तकनीक

एकत्र किए गए आंकड़ों का परीक्षण करने हेतु आंकड़ों को वर्गीकृत करके सारणीबद्ध किया गया एवं आंकड़ों का परीक्षण टी टेस्ट के माध्यम से किया गया।

संबंधित पूर्व साहित्य का अध्ययन

बघेतो, आर.ए. (2010) क्रिएटिवीटी इन द क्लासरुम में छात्रों के कक्षा कक्ष वातावरण में सृजनात्मक चिंतन के पोषण के संदर्भ में अध्ययन किया। शोध से परिणाम प्राप्त हुए कि कक्षा कक्ष में वातावरण का कक्षा में छात्रों की सहभागिता को भी प्रभावित करता है। सृजनात्मक शिक्षक की तैयारी शिक्षण की नवीन तरीकों और कक्षा के सृजनात्मक वातावरण से बढ़ती है।

डबाबन्हन (2010) प्रमोटिंग किंडर गार्डन चिल्ड्रंस क्रिएटिविटी इन द क्लास रुम इंवॉल्वमेंट इन जॉर्डन कक्षा में शिक्षकों के द्वारा निर्मित शिक्षण रणनीतियों का सृजनात्मकता बढ़ाने में योगदान पर अध्ययन किया न्यादर्श के रुप में 215 शिक्षकों को लिया गया। पांच आयामी 50 प्रश्नों की प्रश्नावली बनाकर प्रकाशित की गई शोध परिणामों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि – बच्चों में सृजनात्मकता बढ़ाने में शिक्षकों के शिक्षण अभ्यास भौतिक वातावरण शैक्षिक सामग्री पाठ योजना सहायक है। शिक्षकों के शैक्षिक स्तर में अंतर पाया गया, किन्तु अनुभव स्तर में कोई अंतर नहीं था।

सिंह, उम्मेद एवं पटेल, हंसाबेन डी (2012) ऑर्गेनाइजेशनल क्लाइमेंट ऑफ नवोदय विद्यालय ऑफ गुजरात ने गुजरात के नवोदय विद्यालय के संगठनात्मक वर्गीकृत वातावरण एवं विद्यालय प्रभावशीलता के मध्य संबंधों का अध्ययन किया। शोध परिणामों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि– छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय वातावरण का प्रभाव पड़ता है। विद्यालय वातावरण के विभिन्न आयाम परस्पर जुड़े हुए होते हैं। एक कारक का प्रभाव दूसरे कारक पर पड़ता है।

सिजिलिवा, पीटर सजारका (2012) क्रिएटिव क्लाइमेट एस ए मिंस टू प्रमोट क्रिएटिविटी इन द क्लास रुम ने पिछले संगठनात्मक मनोवैज्ञानिक निष्कर्षों पर विशेष जोर देने और विद्यालय के संदर्भ में उनकी अनुकूलन शीलता के साथ सृजनात्मकता बढ़ाने के लिए पर्यावरण के अंतरराष्ट्रीय व्यवसायिक साहित्य का सर्वेक्षण किया। अध्ययन में पाया कि– कक्षा कक्ष वातावरण को सृजनात्मक चिंतन के योग्य बनाने हेतु आकर्षक ज्ञान अवसरों में वृद्धि करने और समस्या समाधान दक्षता बढ़ाने योग्य बनाना आवश्यक है, कक्षा कक्ष के प्रति शिक्षक की धारणा भी सृजनात्मक चिंतन को बढ़ाने में सहायक है।

कुमार ललित एवं आलम इम्तियाज (2014) ने झारखंड राज्य के रॉची जिले के माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृक्षिक न्यादर्श विधि से किया। टंडन द्वारा नीति अभिसारी चिंतन मापनी एवं वकार मेहंदी द्वारा नीति अपसारी चिंतन मापनी प्रकाशित की गई। शोध परिणामों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि– अपसारी एवं अभिसारी चिंतन में सार्थक संबंध होता है, विद्यालय का प्रकार परिवेश एवं लिंग छात्रों के अपसारी चिंतन को प्रभावित करते हैं।

जावेद तारीक (2017) एसोसिउशन ऑफ क्लास रुम एनवायरमेंट विथ एकेडमिक अचीवमेंट आफ सेकेंडरी स्कूल गर्ल्स इन पाकिस्तान मेडिटेरियन ने माध्यमिक विद्यालयों के 1104 शिक्षकों और 5628 छात्राओं को स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चयनित कर कक्षा वातावरण स्केल प्रकाशित किया। प्राप्त निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि– कक्षा में अधिगम प्रक्रिया एवं कक्षा वातावरण में सकारात्मक संबंध है। कक्षा कक्ष में भौतिक सुविधाओं एवं अनुदेशन सुविधाओं की उपलब्धता कक्षा कक्ष वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि इन दोनों में वृद्धि करती है।

परिणामों का विश्लेषण

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छ.ग. के शासकीय और अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन क्षमता का उनके लिंग के संदर्भ में अध्ययन करना था। शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के बालक एवं शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की बालिकाओं के मध्य अंतर का आकलन करने का प्रयास किया गया।

H_{01} माध्यमिक विद्यालयों के बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर सृजनात्मक चिंतन क्षमता को तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया हैः

वर्ग	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	SED	अंतर कोटि	टी	विशेष विवरण
बालक	100	68.12	6.39	0.99	198	4.23	.01 विश्व स्तर
बालिका	100	72.42	7.40				

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका 01 में माध्यमिक विद्यालय के बालक बालिकाओं के सृजनात्मक चिंतन क्षमता के संदर्भ में क्रमशः 68.12 एवं 72.42 माध्य तथा 6.39 एवं 7.40 मानक विचलन प्राप्त हुआ। टी टेस्ट 4.23 प्राप्त हुआ जो 198 अंतर कोटि .01 विश्वसनीयता स्तर से अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालय के बालक बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।

H_{02} शासकीय अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।

शासकीय अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की विद्यालय के प्रकार के आधार पर सृजनात्मक चिंतन क्षमता को तालिका 02 में प्रस्तुत किया गया हैः

वर्ग	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	SED	अंतर कोटि	टी	विशेष विवरण
शासकीय	100	66.65	8.18	1.26	198	5.47	.01 विश्व स्तर
अशासकीय	100	73.85	8.89				

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका 02 में शासकीय अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन क्षमता के संदर्भ में क्रमशः 66.65 एवं 73.85 माध्य तथा 8.18 एवं 8.89 मानक विचलन प्राप्त हुआ। टी टेस्ट 5.47 प्राप्त हुआ जो 198 अंतर कोटि .01 विश्वसनीयता स्तर से अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालय के बालक–बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। अतः यह परिकल्पना कि शासकीय अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन क्षमता में अंतर नहीं होता है निरस्त की जाती है।

H_{03} शासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।

शासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की लिंग के आधार पर सृजनात्मक चिंतन क्षमता को तालिका 03 में प्रस्तुत किया गया हैः

वर्ग	संख्या (N)	माध्य Mean	मानक विचलन SD	SED	अंतर कोटि	टी टेस्ट	विशेष विवरण
शास. विद्यालय बालक	50	66.39	6.23	1.46	98	2.95	.01 विश्व स्तर
शास. विद्यालय बालिका	50	70.45	7.01				

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका 03 में शासकीय विद्यालय बालक एवं शासकीय विद्यालय बालिका के मध्य सृजनात्मक चिंतन क्षमता परीक्षण किया गया जिसमें मध्य क्रमशः 66.39 एवं 70.45 प्राप्त हुआ मानक विचलन 6.23 एवं 7.01 प्राप्त हुआ। SED 1.46, अंतर कोटि 98 पर टी टेस्ट स्कोर 2.95 प्राप्त हुआ जो .01 विश्वसनीयता स्तर से अधिक एवं महत्वपूर्ण है। अतः परिकल्पना शासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में अंतर नहीं

है, अस्वीकार की जाती है। शासकीय विद्यालय बालक एवं बालिका में सृजनात्मक चिंतन क्षमता में अंतर नहीं होता है, वस्तुतः शासकीय विद्यालय के बालक बालिका में सृजनात्मक चिंतन क्षमता में अंतर होता है।

H_{04} अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।

अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की लिंग के आधार पर सृजनात्मक चिंतन क्षमता को तालिका 04 में प्रस्तुत किया गया हैः

वर्ग	संख्या (N)	माध्य Mean	मानक विचलन SD	SED	अंतर कोटि	टी टेस्ट	विशेष विवरण
अशास. विद्यालय बालक	50	70.02	8.01	1.76	98	1.69	N.S
अशास. विद्यालय बालिका	50	73.12	8.56				

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका 04 में अशासकीय विद्यालय के बालक एवं बालिका के मध्य सृजनात्मक चिंतन क्षमता परीक्षण किया गया जिसमें माध्य 70.02 एवं 73.12 मानक विचलन 8.01, 8.56 SED 1.76 अंतर कोटि 98 पर टी टेस्ट स्कोर 1.69 प्राप्त हुआ जो N.S नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि अशासकीय विद्यालय के बालक एवं बालिका के मध्य सृजनात्मक चिंतन क्षमता में अंतर नहीं होता है।

H_{05} शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालकों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है।

शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालकों की लिंग के आधार पर सृजनात्मक चिंतन क्षमता को तालिका 05 में प्रस्तुत किया गया हैः

वर्ग	संख्या (N)	माध्य Mean	मानक विचलन SD	SED	अंतर कोटि	टी टेस्ट	विशेष विवरण
शास. विद्यालय बालक	50	67.30	6.65	1.49	98	2.57	.05 के विश्व स्तर
अशास. विद्यालय बालक	50	70.45	7.89				

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका 05 में शासकीय विद्यालय एवं अशासकीय विद्यालय बालक के मध्य सृजनात्मक चिंतन क्षमता परीक्षण किया गया है जिसमें मध्य क्रमशः 67.30 एवं 70.45 तथा मानक विचलन 6.65 एवं 7.89 प्राप्त हुआ SED 1.49 एवं अंतर कोटि 98 पर टी टेस्ट स्कोर 2.57 प्राप्त हुआ जो .05 के विश्वसनीयता स्तर से अधिक है। अतः परिकल्पना शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालकों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में कोई अंतर नहीं है,निरस्त की जाती है। शासकीय विद्यालय के बालक एवं अशासकीय विद्यालय के बालकों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में अंतर होता है।

H_{06} शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता कोई में अंतर नहीं है।

शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं के विद्यालय के प्रकार के आधार पर सृजनात्मक चिंतन क्षमता को तालिका 06 में प्रस्तुत किया गया है:

वर्ग	संख्या (N)	माध्य Mean	मानक विचलन SD	SED	अंतर कोटि	टी टेस्ट	विशेष विवरण
शास. विद्यालय बालक	50	71.23	7.19	1.72	98	1.29	N.S
अशास.विद्यालय बालिका	50	73.12	8.45				

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका 06 में शासकीय विद्यालय बालिका एवं अशासकीय विद्यालय बालिका के मध्य सृजनात्मक चिंतन परीक्षण किया गया है जिसमें माध्य क्रमशः 71.23 एवं 73.12 तथा मानक विचलन 7.19 एवं 8.45 प्राप्त हुआ SED 1.72 अंतर कोटि 98 पर ही टेस्ट स्कोर 1.29 प्राप्त हुआ जो N.S. है। अतः परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि शासकीय विद्यालय बालिका एवं अशासकीय विद्यालय बालिका में सृजनात्मक चिंतन क्षमता में अंतर नहीं होता है।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक विद्यालय के बालक बालिकाओं के सृजनात्मक चिंतन क्षमता में अंतर होता है।
2. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता अलग–अलग होती है।
3. शासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक–बालिकाओं के सृजनात्मक चिंतन क्षमता में भिन्नता होती है।
4. अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालक–बालिकाओं के सृजनात्मक चिंतन क्षमता एक दूसरे से अलग है।
5. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के बालकों की सृजनात्मक चिंतन क्षमता एक दूसरे से अलग होती है।
6. शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालय की बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन क्षमता में खास अंतर नहीं होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. माता–पिता को बालक–बालिकाओं आत्म अभिव्यक्ति का समान अवसर प्रदान करना चाहिए।
2. विद्यालयों में विद्यार्थियों को उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति हेतु अवसर दिए जाने की आवश्यकता है एवं उन्हें अपने कार्यों को सबसे अनोखे तरीके से करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।
3. शिक्षकों और माता–पिता द्वारा बच्चों की सफलता स्वीकार करने और उनके प्रत्येक प्रयास को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जाना चाहिए।
4. सृजनात्मक चिंतन को बढ़ावा देने हेतु विद्यालयों में स्वतंत्र चिंतन शैली को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।
5. बालकों के साथ–साथ बालिकाओं के साथ समान व्यवहार के लिए जागरूकता विकसित करने के लिए कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. Dababneh (2010) Promoting kindergarden childrens creativity in the classroom environment in jordan. Early Child development and care Vol.180,No.9, October 2010,1165-1184
2. Javed tariq 2017. Association of classroom Environment with Academic Achievement of Secondary School Girls in Pakistan Mediterranean, *Journal of Social Sciences MCSER* Publishing, Rome-Italy
3. Singh, Ummed & Patel, Hansaben D.(2012). Organisational Climate of Navodaya Vidyalayas of Gujarat. S*cholarly Research Journal for interdisciplinary studies,* International Peer reviewed, ISSN 2278-8808, 1(3), 544-550.
4. Szilvia PPter- Szarka (2012) – Creative climate as a means to promote creativity in the classroom Electronic, *Journal of Research in Educational Psychology,* 10(3), pp: 1011-1034. ISSN: 1696- 2095.2012,no.28.
5. Tegano, D. W. and moran, J.D. (1989). Sex differences in the original thinking of preschool and elementary school children. *Creativity Research Journal.* 2(1-2). pp. 102-110
6. Torrance, E.P.(1963). Education and the creative Potential. Minneapolis, MN : University of Minnesota Press.
7. Torrance, E.P. and Aliotti, N.C. (1969). Sex differences in levels of Performance and test-retest reliability on the Torrance test of Creative thinking ability. *The Journal of Creative behaviour,* 31 (1). pp . 52-57.

****